"शक्तियों का मूर्तिकरण" - एक दृष्टि

भारतीय मनीषियों की दृष्टि बहुत विशाल एवम् दूरदर्शी थी। उन्होंने जिस क्षेत्र का भी अध्ययन किया उसमें एकांगी दृष्टिकोण नहीं था। वे सदैव सभी विषयों को समग्रता की दृष्टि से देखते एवम् परखते रहे। उनका ज्ञान समाधी अवस्था में प्राप्त श्रुत ज्ञान था जिसे हम अन्तःप्रेरणा अथवा स्फुरित ज्ञान (Intuitional Knowledge) अथवा प्रज्ञान भी कह सकते हैं। यह स्फुरित ज्ञान इतना पूर्ण था, कि उनके इस ज्ञान को किसी भी दृष्टिकोण से क्यों न परखा जाय, सम्पूर्ण मिलेगा। मुख्य रूप से उनकी दृष्टि विज्ञान सम्मत तो थी ही, साथ में साहित्य, काव्य राग-रागिनियों एवम् सभी ललित कलाओं से भी पूर्ण थी। क्योंकि उनका मानना था, कि सत्यम् शिवम् सुन्दरम् अर्थात् सत्य और सुन्दर का मिलन ही व्यक्ति एवम् समाज के लिए शिव (कल्याणकारी) हो सकता है। सत्य अथवा यों कहें, कि निष्ठुर सत्य तो विज्ञान है, परन्तु है नीरस और आम आदमी के लिए समझने में है अग्राह्य, तो फिर काव्य, संगीत, साहित्य एवम् ललित कलाओं जैसे - नृत्य-संगीत, मूर्तिकला, चित्रकला, राग-रागिनियाँ इत्यादि कलाओं के सम्मिश्रण से उनकी नीरसता दूर की गयी और स्फुरित ज्ञान स्वयं ही उनके हृदय से इस प्रकार झरने की भाँति फूट निकला, कि बस उस पूर्णता की श्रेष्ठता की कोई मिसाल ही नहीं मिलती और यही कारण है, कि विश्व साहित्य का यह सर्वोत्तम विचार उन्होंने दिया "ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदम, पूर्णात्पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥

एक और श्रेष्ठ कार्य जो उन्होंने किया, कि सारे ज्ञान-विज्ञान को कथाओं, रूपकों, दृष्टान्तों तथा सम्वादों के माध्यम से इस प्रकार पिरो दिया, कि वह अति सुगम, पढ़ने में रोचक तथा सरस बनकर जनसाधारण के लिए ग्राह्य बन गया और इतना विशाल ज्ञान का भण्डार हजारों वर्षों की अनेक उथल पुथल को झेलता हुआ हम तक पहुँच गया। यह उनकी महान विरासत जो हमें प्राप्त है उसके हम सभी जन्म-जन्मांतरों तक ऋणी रहेंगे। यद्यपि इतने लम्बे समय के अन्तराल के बाद काफी भ्रम उत्पन्न हो गये हैं,तथापि इसका यह कारण है कि विज्ञान एवम् साहित्य का संगम तो श्रेष्ठ बन पड़ा परन्तु ऐसे कैसे हो सकता है कि विधाता की सृष्टि में सौन्दर्य का लाभ तो हो और उससे हानि न हो। वास्तव में साहित्य में उपमा, अलंकार, अतिशयोक्तियों एवम् रूपकों की भरमार के कारण स्थिति काफी भ्रमपूर्ण बन गयी है। साहित्यकारों ने रूपक एवम् अतिशयोक्तियों के शब्दिक अर्थ लगाए और फिर क्या था अर्थ का अनर्थ हो गया। विज्ञान में ऐसा कभी नहीं होता। विज्ञानी भारत का हो अथवा इंगलैण्ड का अथवा जापान का, एक हीं बात बोलेगा एक ही अर्थ करेगा। दो कभी नहीं। समाज में साहित्यकार एवम् कवि जनसंख्या में साधारणतया अधिक ही होते हैं अतएव वेद मंत्रों के अर्थ टीकाऐं उनके द्वारा लिखी गयी और पूरे समाज पर छा गयीं। धर्म पर विज्ञानियों की पकड़ विदेशी आक्रांताओं के द्वारा की गयी हत्याओं के कारण पूर्ण रूप से शिथिल हो गयी और जो कवि एवम् साहित्यकार टीकाकार बचे उनके भाष्य ही समाज में प्रचलित होते गये। फिर साधारण विज्ञानी भी साहित्यकार द्वारा रसीले भाष्य से आसानी से भावोद्रेक में उन्हीं के विचारों में बह गये। क्योंकि चुन-चुनकर श्रेष्ठ विज्ञानियों की हत्या जो कर दी गयी थी।

यह सत्य है, कि ईश्वर की प्राप्ति मात्र विज्ञान से नहीं हो सकती जब तक कि भावोद्रेक द्वारा मन को गहरे में डुबोया न जाय। दूसरे अर्थों में भक्ति और विज्ञान दोनों के मिश्रण से ही ईश्वर उपलब्धि सम्भव है, क्योंकि मन इतना प्रमथन स्वभाव वाला एवम् चंचल है कि किसी प्रकार भी काबू में नहीं आता।

ऋषियों ने मानव देह का समग्रता से अध्ययन किया और पाया कि मानव सिर्फ हड्डी, माँस, रक्त, शिरा, मेरु, मज्जा भर से नहीं बना है बल्कि उसके भीतर अनेक सूक्ष्म शक्तियाँ विराजमान हैं, जिनको कि पूरी तरह जाने बिना मानव को ठीक से नहीं जाना जा सकता और न ही उसका सम्पूर्ण विकास ही किया जा सकता है। उन्होंने खोजते खोजते पाया, कि शरीर विज्ञान (Anatomy) एवम् शरीर क्रिया विज्ञान (Physiology) के अध्ययन के अतिरिक्त मानव के भीतर एक मन, एक बुद्धि, एक चित्त एवम् अहंकार भी हैं जिसे चतुष्टय के नाम से जाना गया। इसके अतिरिक्त उन्होंने पाया, कि विराट पुरुष (ब्रह्म) में भी ऐसी ही रचना है। सिद्धान्त प्रतिपादित हुआ "यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे" दोनों Similar त्रिभुज हैं सिर्फ भुजाऐं ही बड़ी छोटी हैं, परन्तु कौण बराबर है।

एक और बात जिस पर अधिक जोर दिया जाता है, वह है, कि वेद के सभी मन्त्रों का ऋषियों ने समाधी अवस्था में दर्शन किया और तब बाद में वे लिखे गये। अतएव ऋषियों को मन्त्र दृष्टा कहा गया। चूँकि सभी मंत्रों और खोजों का ऋषियों ने अपने हृदय में पहले दर्शन किया और दर्शन भी कैसा- "मूर्त रूप से" तब बाद में वैसा का वैसा लिखा गया। संस्कृत भाषा की वर्णमाला का भी इसी प्रकार से दर्शन हुआ, बाद में वे लिखे गये। पूरा का पूरा वेदों का वाड्मय दर्शन से प्राप्त हुआ अतएव इन्हें अपौरुषेय (जो पुरुषार्थ से प्राप्त न किया जा सके) एवम् दर्शन शास्त्र कहा गया। इस प्रसंग में यह बात थोड़ी स्पष्ट करती आवश्यक है कि यह एक अतिशयोक्ति ही लगती है कि जो कुछ वेद में लिखा गया और उस समय के ऋषियों को जो समाधी में दिखलायी पड़ा अर्थात् दर्शन हुआ उसके बाद कोई और व्यक्ति न आगे कुछ देखेगा और न ही भावी पीढ़ी में कोई मंत्र दृष्टा ऋषि होगा। जो जानकारी (ज्ञान) निहित हो गया, बस उतना ही ज्ञान है उस ज्ञान में, न कोई सुधार की गुंजायश है और न ही उसमें कोई त्रुटि की। वह अकाट्य एवम् परमेश्वर की वाणी होने के कारण अन्तिम सत्य है तथा इससे आगे भी

कुछ नहीं । कम से कम यह बात किसी विज्ञानी की समझ के बाहर है । क्या नील-बोहर, रदरफोर्ड, हीसिन-बर्ग एवम् आइंस्टीन किसी ऋषि से कम कहे जा सकते हैं ? और जो खोजें इन्होंने की हैं, वे किसी मंत्र दृष्टा से कम हैं क्या ? तो फिर पूर्व में घोषित अन्तिम वाक्य को कैसे पूर्ण सत्य मान लिया जाय ? वर्तमान में इन्टरनेट प्रणाली (Internet System) द्वारा आप भूतकाल में हुई किसी भी बातचीत को बटन दबा कर सुन सकते हैं - जैसे 9 अगस्त 1942 को नेहरू जी अथवा गाँधी जी ने क्या भाषण दिए थे, अथवा भौतिक शास्त्र की अमुक पुस्तक के अमुक पृष्ठ पर क्या लिखा है, उसे कम्प्यूटर के पर्दे पर पढ़ सकते हैं । ठीक इसी प्रकार से इस विश्व की हर घटना जो चाहे अरबों वर्ष पूर्व घटित हो चुकी हो और किसी भी क्षेत्र की जानकारी से सम्बन्धित हो, सारी की सारी जानकारी विराट (Macro) के चित्ताकाश में सन्निहित रहती है उसे पूर्व के ऋषियों ने समाधी अवस्था में सुना अथवा देखा था । आवश्यकता बस है मन की एकाग्रता की । इस प्रकार यह इन्टरनेट प्रणाली शीघ्र ही जनसाधारण तक पहुँचने वाली है और तब होगा सूचनाओं के विस्फोट का युग ।

आज विज्ञान ने हमारे वेदों में कथित अनेक सत्यों को पुनर्स्थापित भी किया है और अनेक भ्रमों का पर्दाफाश भी । हो सकता है, कि साहित्यिक अर्थों के कारण उत्पन्न भ्रमों का पर्दाफाश हुआ हो, शेष को सम्बल मिला हो । आइए "दर्शन" शब्द का विज्ञान के शब्दों में क्या स्पष्टीकरण हो सकता है थोड़ी इस पर विश्लेषणात्मक दृष्टि डालें ।

प्रथम उदाहरण :- मान लीजिए कोई मूर्तिकार कोई मूर्ति को गढ़ने का कार्य प्रारम्भ करता है, तो पहले वह अपने मन की गहराइयों में उतर कर चिन्तन (चिन्ता मुक्त सोचना) एवम् मनन (जहाँ मन न रहे, ऐसा सोचते-सोचते मन रहित अवस्था में खो जाना) की अवस्थाओं से गुजरता है, तब होता यह है, कि उसके चित्त में (Sub-Conscious), जो कुछ पूर्व में लिखा स्मृति (Record) में हुआ होता है, वही सब सूचनाऐं एकत्रित होकर विराट के चित्त (Universal Sub-Conscious) से सम्बद्ध हो जाती हैं और ध्यान की गहरी अवस्था में वह व्यक्तिगत सूचनाऐं विराट से कुछ अधिक परिष्कृत होकर मानस पटल पर पुनः प्रगट होती हैं और वह जो चित्र उभरता है वह साधारण चित्रों से कहीं अधिक सुन्दर होता है । ध्यान की गहराई कितनी थी, इस पर निर्भर करता है परिष्कृत चित्र का सौन्दर्य और फिर मूर्तिकार उस चित्र को प्रथम कागज़ पर बाद में पत्थर पर उकेर देता है । कला सौन्दर्य फिर चाहे वह नृत्य का हो अथवा संगीत का या फिल्मकार की कला कृति, सभी का रहस्य बस इतना ही है । यही होती है मंत्र दृष्टा की मनः स्थिति भी । ***यदि ऋषियों की कही बातों को अन्तिम सत्य मान लिया जाए तो फिर अलग अलग ऋषियों के विचारों में अनेकता क्यों है ? विशेषकर - सृष्टि रचना के संदर्भ में तो कम से कम मतैक्य है ही नहीं, तो फिर उनकी बातों को अन्तिम सत्य कैसे मान लिया जाए ?***

दूसरा उदाहरण :- कोई भी मंत्र, शब्द रूप में व्यक्त होने से पूर्व ध्वनि होता है और ध्वनि से पूर्व होता है मन की विचार तरंग और विचार तरंग के पूर्व वह किसी अव्यक्त अवस्था में होता है, जिसे नाद कहा गया है । यह अमूर्त नाद शून्य में उत्पन्न होता है । वास्तव में शून्य न कहकर, वह भी व्यक्ति के चित्त से ही उत्पन्न होता है, ऐसा कहना अधिक उपयुक्त होगा । क्योंकि जब वह व्यक्ति ध्यान की गहराइयों में डूब जाता है तब उसका चित्त विराट के चित्त से जुड़ जाता है जहाँ पर पहले से ही अनन्त सूचनाऐं एकत्रित रहती हैं और उनमें से कुछ सूचनाऐं व्यक्ति के चित्त में बह पड़ती हैं और व्यक्ति के मुख से झरने की भाँति विज्ञान सम्मत मंत्र, काव्य शैली में फूट पड़ते हैं, इन्हीं सूचनाओं को वेद वाक्य, आप्त वाक्य, वेद वाणी, अपौरुषेय वाक्य समझना चाहिए । एक बात और, कि साहित्य, काव्य एवम् अन्य ललित कलाओं की पृष्ठभूमि वाले ध्यानी के मानस पटल पर कला सम्बन्धी प्रेरणाओं का उदय होता है तथा विज्ञानी के मानस पटल पर वैज्ञानिक नवीन शोधों की प्रेरणाओं का झरना फूट पड़ता है, परन्तु प्रज्ञान की परिपूर्ण अवस्था में प्रस्फुटित शब्द ऐसे मंत्र होते हैं जिनका आधार विज्ञान होता है और वे काव्य एवम् साहित्य के सौन्दर्य से आप्लावित होते हैं ।

आशा है, कि अगर पाठकगण इस विश्लेषण को हृदयंगम कर पायेंगे, तो फिर किसी प्रकार के रहस्य अथवा अंध श्रद्धा के लिए कोई स्थान नहीं रहेगा । **सार्थक बात है, ध्यान की परिपूर्ण एवम् प्रगाढ़ अवस्था द्वारा व्यक्तिगत चित्त का विराट के चित्त से सम्बद्ध हो जाना ।**

आइए, अब चर्चा करें सूक्ष्म शक्तियों के मूर्तिकरण की । मूर्तिकरण अथवा चित्रीकरण का अर्थ है किसी का ऐसा सही-सही चित्र बना देना कि उस चित्र में उस व्यक्ति के सभी गुणों का पूरा-पूरा समावेश हो जाये और मानव उसका चिन्तन करते-करते उसी चित्र में समाहित हो जाय । मानव का स्वभाव है, कि वह अपने जैसे मानव अथवा उसके आसपास के पशु-पक्षियों के बीच सम्बन्ध बनाकर ही अपना विकास करना चाहता है । अतएव इस प्रकार के चित्रीकरण के द्वारा समाज को उपासना से विशेष लाभ हुआ है । अतएव मूर्तिकरण एवम् चित्रीकरण को इसी दृष्टि से देखा जाना चाहिए ।

1. शिव का कलात्मक रूप :-

❁ *शिव* = (शव + इव) अर्थात् शव जैसा, अर्थात् Nutron । जिस प्रकार शव पूर्ण रूप से संसार से मुक्त होता है, उसी प्रकार से शिव पूर्ण वैरागी, समाधिस्थ वाघम्बर धारी, भभूत लपेटे, एकान्त भोगी, भीख माँग कर खाने वाले, शान्त और कैलाश वासी चित्रित किए गये । इस प्रकार शिव को विराट पुरुष की आत्मा के रूप में चित्रित किया गया है ।

❁ ***गंगाधर*** - आकाश गंगा का केन्द्र Nutron अणुओं के विस्फोट से निर्मित प्रकाश स्तम्भनुमा है, जो आकाश गंगा के कुल Mass का 2/3 है और दोनों ओर से Cantilever की भाँति लटके फलकों को सम्भाले हुये है । अतएव शिव को आकाश

गंगा सिर पर धारण किए हुये चित्रित किया गया है। वास्तव में गंगा नदी का चित्रण दूर के अर्थों में सही कह सकते हैं। गंगा भारत में आदिकाल से ही जीवनदायिनी रही है। पृथ्वी पर जीवन आकाश गंगा से आया है। इसी शब्द को कालान्तर में गंगा नदी के रूप में जाना जाने लगा।

❁ ***चन्द्रमौलि गौरवर्ण एवम् नीलकण्ठ*** – चन्द्रमा सभी नक्षत्रों एवम् ग्रहों का अधिपति माना गया है अतएव उसे सबका प्रतिनिधि रूप मस्तक पर स्थान दिया गया है। Nutron का प्रकाश गौरवर्ण हुआ परन्तु परा प्रकृति के अंश आल्फा तरंग से वे नीलकण्ठ बन गये।

❁ ***त्रिशूलधारी*** – शिव की उपासना से जीव के तीनों प्रकार के अधिदैविक (ईश्वरीय शक्तियों द्वारा प्रदत्त कष्ट) आधिभौतिक (शारीरिक आधि-व्याधि) एवम् अध्यात्मिक (मानसिक, बौद्धिक एवम् चित्त सम्बन्धी कष्ट) का शमन होता है।

❁ ***डमरु*** – सृष्टि का संहार करने हेतु वे इस वाद्य का प्रयोग करते हैं। इससे भयंकर नाद उत्पन्न होकर सृष्टि का नाश होता है।

❁ ***नन्दीश्वर*** – धर्म रूपी बैल पर वे सवारी करते हैं अर्थात् सम्पूर्ण सृष्टि की उत्पत्ति, पालन एवम् विनाश वे धर्म के नियमों के आधार पर करते हैं।

❁ ***पार्वतीश्वर*** – Anti Nutron को उनकी पत्नी के रूप में दिखलाया गया है। ये हिमांचल की पुत्री हैं अर्थात् जड़ प्रकृति ही पार्वती के नाम से जानी गई है, परन्तु पार्वती शक्ति स्वरूपा हैं।

❁ ***स्वामी कार्तिकेय*** – बड़े पुत्र अर्थात् पूर्ण वैराग्य के प्रतीक। शिव को वेद स्वरूप माना गया है और उनके पुत्र को षट् दर्शनों का प्रतीक अर्थात् सभी षट् दर्शनों के वे ज्ञाता हैं, इसीलिए उनके षट् मुख हैं।

❁ ***श्री गणेश जी*** – विघ्न विनाशक, बुद्धि के देवता अपने पिता की भाँति सदैव राम राम का भजन करने वाले, सम्पूर्ण सृष्टि के नियोजक (Planner), देवताओं में एवम् संसार में मनुष्यों के बीच सर्वप्रथम पूज्यनीय, आज्ञा चक्र पर स्थित जहाँ से मानव के जीवन की सारी घटनाओं का निर्देशन, अधिग्रहण एवम् संचालन होता है। उदान में स्थित विद्युत प्रवाह की उच्चतर frequency say (300 k htz).

मानव शरीर में ब्रह्म रंध्र पर Nutron के अणुओं का घना बादलनुमा स्थान है। इसी शिखर को बाहर कैलाश कहा गया और हिमालय पर उस स्थान को तीर्थ रूप में श्रद्धा का स्थल निर्मित किया गया। Tourism (तीर्थाटन), स्वास्थ्यवर्धन, Mountaineering आदि कई कारणों से इस प्रकार की विचारधारा को बल मिला।

ज्योतिर्लिंग अथवा शिवलिंग शिव का शुद्ध वैज्ञानिक स्वरूप समझना चाहिए।

2. विष्णु का कलात्मक चित्रण :–

❁ ***विष्णु*** – ऐसा अणु जो विष तुल्य हो अर्थात् – "Proton" जो जीव बनकर बार बार जीवात्मा को आवागमन के चक्र में घुमाता रहता है और संसार रूपी विष का पान कराता रहता है। विष्णु लोक अथवा बैकुण्ठ लोक भी शिव लोक के पास ही है और वह भी प्रकाश लोक ही है। ध्रुव तारे के आस-पास यह लोक Proton अणुओं से निर्मित है और विष्णु पर गामा (तमस्) तरंग का प्रभाव होने से वे गहरे नील वर्ण के बन गये और इसीलिए वे सदैव अर्ध निमीलित नेत्रों से शेष शय्या पर सोये रहते हैं। तमस् का अर्थात् गामा किरणों का प्रभाव होने पर भी उनके समक्ष T.V. Screen जैसा ही कोई पर्दा है, जिस पर पूरी आकाश गंगा में रहने वाले सभी जीवों के कर्मों का चित्र लगातार उभरता रहता है और वे उसे नियमानुसार कर्मफल देकर नियंत्रित करते हैं अर्थात् वे ब्रह्म के चित्त का अथवा Supreme Computer का कार्य करते हैं।

❁ ***शेषशायी*** – Proton एक शक्तिशाली Magnetic Field उत्पन्न करता है। शेषनाग आकर्षण शक्ति के प्रतीक हैं।

❁ ***क्षीरसागर*** – वास्तव में मानव की रीढ़ में एवम् हर जीन के चारों ओर श्वेत तरल पदार्थ के बीच विद्युत स्पन्दनों के कारण हमारे चित्त (Genes) पर electronically हर क्षण की हर घटना बड़ी बारीकी से लिखी जाती है और समानान्तर रूप से आकाश गंगा में निहित Proton layer कर्मफलों को उत्पन्न करता है।

❁ ***शंख चक्र गदा पद्म धारी*** – 1. शंख – पापी जीवों को सावधान करने हेतु, 2. गदा – पापी जीवों को दण्डित करने हेतु, 3. चक्र – उन पापी जीवों को मारने हेतु जो साधारण दण्ड से सुमार्ग पर नहीं चलने लगते, 4. पद्म – जीव को यह शिक्षा देने हेतु कि जीवन कमल की भाँति जिओ, निर्लेप आसक्ति रहित, तभी जीवन सौन्दर्यपूर्ण बनेगा।

❁ ***लक्ष्मीपति*** – Anti Proton जो सदैव नारायण के पाँयतें बैठी रहकर भगवान विष्णु की सेवा करती रहती है। सृष्टि के पालन हेतु धन-सम्पत्ति अर्थात् लक्ष्मी परमावश्यक है अतएव Anti Proton को लक्ष्मी के रूप में माना गया है। इन दम्पति को कोई सन्तान नहीं है अर्थात् इन दम्पति ने मैथुनी सन्तानोत्पत्ति नहीं की है। बल्कि Proton स्वतः ही अनेक टुकड़ों में (By cell division) बँट जाता है और सम्पूर्ण जीव समुदाय इस प्रकार अनन्त नाम रूपों में पूरी सृष्टि में प्रगट हो रहा है। मनु शतरूपा की उत्पत्ति भी भगवान विष्णु ने अपने शरीर के आधे-आधे शरीर से उत्पन्न करके की अर्थात् Cell division द्वारा।

❁ ***गंगा का प्राकट्य*** – कथा है कि, विष्णु भगवान के चरणों से गंगा नदी प्रगट हुई। जीवन रूपी नदी जो पृथ्वी पर आई और बराबर अभी भी पृथ्वी पर उतरती रहती है, वह आकाश गंगा में विष्णु लोक से Proton के वर्तमान Network से उद्भूत

गंगा सिर पर धारण किए हुये चित्रित किया गया है। वास्तव में गंगा नदी का चित्रण दूर के अर्थों में सही कह सकते हैं। गंगा भारत में आदिकाल से ही जीवनदायिनी रही है। पृथ्वी पर जीवन आकाश गंगा से आया है। इसी शब्द को कालान्तर में गंगा नदी के रूप में जाना जाने लगा।

❁ ***चन्द्रमौलि गौरवर्ण एवम् नीलकण्ठ*** – चन्द्रमा सभी नक्षत्रों एवम् ग्रहों का अधिपति माना गया है अतएव उसे सबका प्रतिनिधि रूप मस्तक पर स्थान दिया गया है। Nutron का प्रकाश गौरवर्ण हुआ परन्तु परा प्रकृति के अंश आल्फा तरंग से वे नीलकण्ठ बन गये।

❁ ***त्रिशूलधारी*** – शिव की उपासना से जीव के तीनों प्रकार के अधिदैविक (ईश्वरीय शक्तियों द्वारा प्रदत्त कष्ट) आधिभौतिक (शारीरिक आधि-व्याधि) एवम् अध्यात्मिक (मानसिक, बौद्धिक एवम् चित्त सम्बन्धी कष्ट) का शमन होता है।

❁ ***डमरु*** – सृष्टि का संहार करने हेतु वे इस वाद्य का प्रयोग करते हैं। इससे भयंकर नाद उत्पन्न होकर सृष्टि का नाश होता है।

❁ ***नन्दीश्वर*** – धर्म रूपी बैल पर वे सवारी करते हैं अर्थात् सम्पूर्ण सृष्टि की उत्पत्ति, पालन एवम् विनाश वे धर्म के नियमों के आधार पर करते हैं।

❁ ***पार्वतीश्वर*** – Anti Nutron को उनकी पत्नी के रूप में दिखलाया गया है। ये हिमांचल की पुत्री हैं अर्थात् जड़ प्रकृति ही पार्वती के नाम से जानी गई है, परन्तु पार्वती शक्ति स्वरूपा हैं।

❁ ***स्वामी कार्तिकेय*** – बड़े पुत्र अर्थात् पूर्ण वैराग्य के प्रतीक। शिव को वेद स्वरूप माना गया है और उनके पुत्र को षट् दर्शनों का प्रतीक अर्थात् सभी षट् दर्शनों के वे ज्ञाता हैं, इसीलिए उनके षट् मुख हैं।

❁ ***श्री गणेश जी*** – विघ्न विनाशक, बुद्धि के देवता अपने पिता की भाँति सदैव राम राम का भजन करने वाले, सम्पूर्ण सृष्टि के नियोजक (Planner), देवताओं में एवम् संसार में मनुष्यों के बीच सर्वप्रथम पूज्यनीय, आज्ञा चक्र पर स्थित जहाँ से मानव के जीवन की सारी घटनाओं का निर्देशन, अधिग्रहण एवम् संचालन होता है। उदान में स्थित विद्युत प्रवाह की उच्चतर frequency say (300 k htz).

मानव शरीर में ब्रह्म रंध्र पर Nutron के अणुओं का घना बादलनुमा स्थान है। इसी शिखर को बाहर कैलाश कहा गया और हिमालय पर उस स्थान को तीर्थ रूप में श्रद्धा का स्थल निर्मित किया गया। Tourism (तीर्थाटन), स्वास्थ्यवर्धन, Mountaineering आदि कई कारणों से इस प्रकार की विचारधारा को बल मिला।

ज्योतिर्लिंग अथवा शिवलिंग शिव का शुद्ध वैज्ञानिक स्वरूप समझना चाहिए।

2. विष्णु का कलात्मक चित्रण :–

❁ ***विष्णु*** – ऐसा अणु जो विष तुल्य हो अर्थात् – "Proton" जो जीव बनकर बार बार जीवात्मा को आवागमन के चक्र में घुमाता रहता है और संसार रूपी विष का पान कराता रहता है। विष्णु लोक अथवा बैकुण्ठ लोक भी शिव लोक के पास ही है और वह भी प्रकाश लोक ही है। ध्रुव तारे के आस-पास यह लोक Proton अणुओं से निर्मित है और विष्णु पर गामा (तमस्) तरंग का प्रभाव होने से वे गहरे नील वर्ण के बन गये और इसीलिए वे सदैव अर्ध निमीलित नेत्रों से शेष शय्या पर सोये रहते हैं। तमस् का अर्थात् गामा किरणों का प्रभाव होने पर भी उनके समक्ष T.V. Screen जैसा ही कोई पर्दा है, जिस पर पूरी आकाश गंगा में रहने वाले सभी जीवों के कर्मों का चित्र लगातार उभरता रहता है और वे उसे नियमानुसार कर्मफल देकर नियंत्रित करते हैं अर्थात् वे ब्रह्म के चित्त का अथवा Supreme Computer का कार्य करते हैं।

❁ ***शेषशायी*** – Proton एक शक्तिशाली Magnetic Field उत्पन्न करता है। शेषनाग आकर्षण शक्ति के प्रतीक हैं।

❁ ***क्षीरसागर*** – वास्तव में मानव की रीढ़ में एवम् हर जीन के चारों ओर श्वेत तरल पदार्थ के बीच विद्युत स्पन्दनों के कारण हमारे चित्त (Genes) पर electronically हर क्षण की हर घटना बड़ी बारीकी से लिखी जाती है और समानान्तर रूप से आकाश गंगा में निहित Proton layer कर्मफलों को उत्पन्न करता है।

❁ ***शंख चक्र गदा पद्म धारी*** – 1. शंख – पापी जीवों को सावधान करने हेतु, 2. गदा – पापी जीवों को दण्डित करने हेतु, 3. चक्र – उन पापी जीवों को मारने हेतु जो साधारण दण्ड से सुमार्ग पर नहीं चलने लगते, 4. पद्म – जीव को यह शिक्षा देने हेतु कि जीवन कमल की भाँति जिओ, निर्लेप आसक्ति रहित, तभी जीवन सौन्दर्यपूर्ण बनेगा।

❁ ***लक्ष्मीपति*** – Anti Proton जो सदैव नारायण के पाँयतें बैठी रहकर भगवान विष्णु की सेवा करती रहती है। सृष्टि के पालन हेतु धन-सम्पत्ति अर्थात् लक्ष्मी परमावश्यक है अतएव Anti Proton को लक्ष्मी के रूप में माना गया है। इन दम्पति को कोई सन्तान नहीं है अर्थात् इन दम्पति ने मैथुनी सन्तानोत्पत्ति नहीं की है। बल्कि Proton स्वतः ही अनेक टुकड़ों में (By cell division) बँट जाता है और सम्पूर्ण जीव समुदाय इस प्रकार अनन्त नाम रूपों में पूरी सृष्टि में प्रगट हो रहा है। मनु शतरूपा की उत्पत्ति भी भगवान विष्णु ने अपने शरीर के आधे-आधे शरीर से उत्पन्न करके की अर्थात् Cell division द्वारा।

❁ ***गंगा का प्राकट्य*** – कथा है कि, विष्णु भगवान के चरणों से गंगा नदी प्रगट हुई। जीवन रूपी नदी जो पृथ्वी पर आई और बराबर अभी भी पृथ्वी पर उतरती रहती है, वह आकाश गंगा में विष्णु लोक से Proton के वर्तमान Network से उद्भूत

हुई है और बराबर उसी स्थान से पृथ्वी पर आती है। भारत में आदिकाल से ही गंगा ने एक महत्वपूर्ण जीवनदायिनी जल स्रोत के रूप में अपना योगदान दिया है और जहाँ जल होगा वहीं पर Amino acid की उत्पत्ति होगी, जो जीवन के लिए परम आवश्यक वाहक पदार्थ है। इसीलिए साहित्यकारों द्वारा गंगा को आकाश गंगा का पर्यायवाची मानकर गंगा नदी को विष्णु के चरणों से उद्‌भूत स्वीकार कर लिया गया। वैसे भी गंगा जल में जो विशेष गुण है, अर्थात् इसका जल कभी नहीं सड़ता, इसके कारण भी इसकी पवित्रता और महत्ता असंदिग्ध है।

3. श्री गणेश का कलात्मक रूप :–

❁ श्री गणेश बुद्धि के देवता माने गये हैं और बुद्धि तो है ही मन का उच्चतर स्पन्दनों से बना परिष्कृत रूप। चूँकि इनकी पार्वती से उत्पत्ति हुई है अतएव ये प्रकृति से उत्पन्न होकर बाद में शंकर द्वारा स्वीकार किए गये अर्थात् जब एरावत हाथी का सिर शंकर जी द्वारा लगाया गया तब बुद्धिमान व्यक्ति बहुत बार दूसरों का शोषण अवश्य करता है, यह मनोवैज्ञानिक बात है। अतएव बुद्धि को पशुवत् बतलाने के लिए उसके पीछे सिर काटने एवम् हाथी का सिर जोड़ने की कथा का ताना बाना बुना गया। हाथी पशुओं में सात्विक आहार करने वाला एवम् सबसे अधिक बुद्धिमान पशु होता है। कुबेर जो देवताओं के धनपति माने जाते हैं, उनके चित्र को ऋषियों ने एक कुरूप व्यक्ति के रूप में दिखलाया है। कारण है, कि धन की प्रवृत्ति संसार की ओर उन्मुख करती है, अतएव उसे निन्दनीय मानना ऋषियों का ध्येय वाक्य रहा है। हाथी का रंग हरा सा होता है। रंगों के विज्ञान के अनुसार VIBGYOR की शृंखला में इनका रंग में चौथा क्रम है। ब्रह्म का रंग श्याम (Violet), शिव का कण्ठ नील रंग (Indigo) का, विष्णु के पूरे शरीर का रंग नीला, दुर्गा का रंग पीला, हनुमान का नारंगी (Orange) तथा काल भैरव का रंग लाल (Red) माना गया है। रंगों में भाव विज्ञान अथवा साधक के मन को विशिष्ट उत्प्रेरकता प्राप्त हो ऐसी व्यवस्था की गयी है। इनकी बुद्धिमत्ता ब्रह्माण्ड की दौड़ में अपने भ्राता श्री पर विजय श्री की उपलब्धि के कारण विख्यात हुई। प्रत्येक मांगलिक कार्य के प्रारम्भ में श्री गणेश जी को मनाना और उनकी पूजा अर्चना करने से वे कार्य निर्विघ्न रूप से पूरे हो जाते हैं, ऐसी मानना है। स्पष्ट है, कि परब्रह्म की बुद्धि को अनुकूल बना लेना तो शुभ होगा ही ? ऋद्धि एवम् सिद्धि नामक इनकी दो पत्नियाँ हैं। ये सदैव राम नाम लेते रहते हैं, इसीलिए सभी देवताओं में इन्हें अग्रणी स्थान प्राप्त है।

❁ ***मोदकप्रिय –*** संसारी बुद्धि वाला व्यक्ति सदैव लड्डुओं से भरपूर तो होगा ही और वह संसार का खूब उपभोग कर कर के बड़े पेट (लम्बोदर) वाला भी बन जायगा।

❁ ***परब्रह्म की बुद्धि –*** श्री गणेश जी परा प्रकृति (पार्वती) से उत्पन्न होकर परब्रह्म की बुद्धि के स्थान पर अवस्थित है तथा सभी देवताओं में उनका स्थान परम अग्रणी है। ब्रह्म की बुद्धि के स्थान पर ब्रह्मा जी माने गये हैं।

4. श्री हनुमान जी का कलात्मक रूप :– ऐसा पाया जाता है, कि व्यक्ति का मन सदैव चञ्चल रहता है, अतएव परब्रह्म का मन भी चञ्चल ही होता होगा। अतएव श्री हनुमान जी बन्दर और फिर पवन के पुत्र होने के कारण चञ्चलता के सर्वश्रेष्ठ प्रतीक हैं। परन्तु चूँकि श्री हनुमान जी परब्रह्म (राम) के मन हैं एवम् उनके परम भक्त भी, इसलिए उनमें ब्रह्मचारी, बलशाली, ज्ञानियों में अग्रणी आदि अनेक श्रेष्ठ गुण तो होने ही होंगे। अतएव साधक इन्हीं गुणों का चिन्तन करता हुआ विराट के मन श्री हनुमान जी के माध्यम से राम तक पहुँच सकता है। इसीलिए कहा है "राम दुआरे तुम रखवारे – होत न आज्ञा बिनु पैसारे" आदि आदि उनका बन्दर का जैसा नारंगी (orange) सिंदूरी रंग है जो रंग-विज्ञान के अनुसार साधक के मन को साधने में सहायक है।

श्री हनुमान जी की पूजा से शनि ग्रह तथा मंगल ग्रह की कुदृष्टि शान्त होती है, ऐसा शास्त्रों का मत है। मंगलवार एवम् शनिवार को सिंदूर का अभिषेक एवम् बूँदी का प्रसाद चढ़ाने का विधान है।

5. आकाश :– परमात्मा का चित्त जिसमें सम्पूर्ण विश्व की सूचनाऐं (ज्ञान) एकत्रित रहती हैं, आकाश तत्व है। इन्हीं सूचनाओं के आधार पर सृष्टि का सृजन, पालन एवम् लय की प्रक्रिया समय-समय पर होती रहती है। वेद का उद्‌गम भी यही चित्त है। ऋषियों ने समाधी अवस्था में इन्हीं सूचनाओं को वेद वाक्यों के रूप में दोहन किया। इन सूचनाओं (ज्ञान) को अथवा सिद्धान्तों को धर्म भी कहा गया है। परब्रह्म धर्म के विधान के अर्थात् धर्म के नियमों के अनुसार सृष्टि का विस्तार करता है और फिर उसी विधान के अनुसार समेट भी लेता है। अतएव मनुष्य जीवन में धर्म पालन करने से मनुष्य को सुख एवम् शान्ति की प्राप्ति होती है। सम्पूर्ण प्रकृति धर्म के विधान का कभी भी अतिक्रमण नहीं करती। मानव अतिक्रमण करता है, अतएव दुःख पाता है।

6. परशिव :– परब्रह्म की आत्मा परशिव है। यही चैतन्य शक्ति हैं, जो पराशक्ति के साथ मिलकर सृष्टि का प्रसार करते हैं।

7. ब्रह्मा :– (विराट) की जो आवृत्ति करता हो, वह "ब्रह्मा" कहा गया है। अणु के चारों ओर Electron 600 Trillion Miles/Second की गति से चक्कर लगाता रहता है और यही प्रक्रिया ब्रह्म (विराट) में भी निरन्तर हो रही है। कल्पान्त में ब्रह्मा का नाश हो जाता है। ब्रह्मा की सौ वर्ष की आयु पूरी होने पर कल्पान्त हो जाता है। ब्रह्मा के सौ वर्ष मानव के 31 नील, 10 खरब, 40 अरब वर्ष के बराबर होते हैं। ब्रह्मा की पूजा का शास्त्रों में निषेध है, क्योंकि ब्रह्मा सम्पूर्ण जीवों को पदार्थ जगत की ओर प्रेरित करने का माध्यम है, अतएव ऋषियों ने ऐसे देवता को पूजा के योग्य नहीं समझा। इसके पीछे भगवान शिव द्वारा ब्रह्मा को श्राप देने की कथा भी है। ब्रह्मा को ब्रह्म (विराट) की बुद्धि के स्थान पर माना गया है। सृष्टि रचना का सम्पूर्ण कार्य ब्रह्मा द्वारा ही सम्पादित होता है।

8. चन्द्रमा :– चन्द्रमा पृथ्वी के सबसे निकट का उपग्रह है तथा सभी नक्षत्रों एवम् ग्रहों का अधिपति अर्थात् नेता माना गया है, क्योंकि सभी नक्षत्रों एवम् ग्रहों के चन्द्रमा के साथ क्रिया प्रतिक्रिया से ही मानव मन एवम् बुद्धि अत्यधिक प्रभावी होनी रहती है। अतएव इसे ब्रह्म (विराट) के मन की संज्ञा से भी विभूषित किया गया है। चन्द्रमा के प्रभाव से समुद्रों/महासागरों में पूर्णमासी तथा अमावस्या के दिनों में जोर के ज्वारभाटे आते हैं एवम् इन दिनों पागल लोग अधिक पागल हो जाते हैं। चन्द्रमा में दिखलायी देने वाले काले रंग के दाग को कवियों ने अनेक प्रकार से वर्णन किया है। तुलसीदास ने इसे भगवान राम की श्याम मूर्ति बतलाया है। ताजा समाचार यह है, कि चन्द्रमा पर रेत एवम् क्रेटर आदि के अतिरिक्त जल और बर्फ के बड़े बड़े भण्डारों का भी पता चला है। चन्द्रमा एवम् इसके साथी ग्रह एवम् नक्षत्रों के कुप्रभाव को कम करने के लिए इनकी पूजा अर्चना का विस्तृत विधान वेदों में वर्णित है। चन्द्रमा औषधियों में रस एवम् औषधीय गुणों को विकसित करता है, ऐसा शास्त्रों का मत है।

9. सूर्य :– इस देवता को पूषन तथा ऊषा आदि अनेक नामों से जाना जाता है। सूर्य सात अश्वों वाले रथ पर सवार होकर पृथ्वी वासियों को नित्य शक्ति का दान करता है। सात अश्व अर्थात् सात रंग VIBGYOR सूर्य की श्वेत किरणों में पाये जाते हैं। Violet (श्याम) रंग जो स्वास्थ्य के लिए हानिकर है Ozone (ओज़ोन) की पर्त द्वारा सोख लिया जाता है। सूर्य और चन्द्र को विराट पुरुष की दो आँखों की संज्ञा दी गयी है। वास्तव में हमारी आकाश गंगा में करोड़ों सूर्य एवम् करोड़ों चन्द्रमा (उपग्रह) हैं, वे सभी दिन एवम् रात्रि में क्रमशः प्रकाश दीप का कार्य करते हैं इसीलिए उन्हें विराट की आँखें कहा गया है। ये सभी साहित्यिक/अलंकारिक भाषा है।

10. श्री सरस्वती देवी :– ब्रह्मा (Electron) की पत्नी अर्थात् anti electron को ज्ञान की देवी के रूप में स्वीकारा जाना स्वाभाविक है, क्योंकि ब्रह्मा को ब्रह्म की बुद्धि का स्थान प्राप्त है, अतएव बुद्धि एवम् ज्ञान दोनों के संयुक्त होने से ही तो कार्य पूरा होगा, ऐसी ऋषियों की सोच रही है।

11. श्री शारदा देवी :– ब्रह्मा की पुत्री शारदा को वीणा पाणि के रूप में दिखाया जाना, यह इंगित करता है कि वे सम्पूर्ण ललित कलाओं जैसे – संगीत, नृत्य, वाद्य, चित्रकारी आदि की अधिष्ठात्री देवी हैं। सभी ललित कलाओं के आरम्भ के पूर्व इनकी पूजा अर्चना इनकी शक्ति को साधक के भीतर जगाने का काम करती है।

12. श्री कुबेर :– देवताओं के धनपति (खजांची) श्री कुबेर को स्वीकारा गया है। इनकी शक्ल कुरूप दिखलायी गयी है। हर धनी व्यक्ति अपने जीवन काल में कंजूस पाया गया है। यही उसकी कुरूपता है। इनका ध्यान व जप करने से धन की प्राप्ति होती है। इनके पास एक पुष्पक विमान भी है।

13. इन्द्र :– काले घने गरजने वलो बादलों के भीतर कई करोड़ बोल्ट की विद्युत उत्पन्न होती है और वह जब कड़कती है और किसी ऊँची अट्टालिका पर गिरती है तब बहुधा बहुत विनाश हो जाता है। इसी तड़ित को जो महान शक्तिशाली होती है, इन्द्र कहा है। यही इन्द्र स्वर्ग का राजा कहा गया है। सारे देवता जल, अग्नि, वायु, सूर्य, चन्द्र, किन्नर, यक्ष, गंधर्व, ग्रह सभी इस तड़ित से प्रभावित होते हैं। इन्द्र के दरबार में अप्सराऐं नाचती हैं। Electron, Proton एवम् Nutron मूल परमाणुओं के अतिरिक्त ऐसे 250 कणों से अधिक की जानकारी प्राप्त हुई है। जो कण वायुमण्डल में नृत्य करते रहते हैं और उनसे सुन्दर निनाद उत्पन्न होता रहता है। तड़ित से इन कणों पर प्रभाव पड़ता है। आखिर ये सब भी तो हैं आवेशित कण (charged particles) ही। एवम् मेघों आदि का सृजन

14. पृथ्वी :– पृथ्वी अत्यन्त क्षमाशील है और अहर्निश घूम घूम कर हमारे कल्याण के लिए रात-दिन, ऋतु परिवर्तन/तथा सूर्य से ताप एवम् शक्ति प्रदान करवाती है।

15. वायु देवता :– प्राण वायु (Oxygen) एवम् नेत्रजन (Nitrogen) के मुख्य रूप से मिलने से वायु बनती है। वायु का एक क्षण के लिए रुक जाना पूरे जीव जगत का विनाश कर देगा। जो निष्काम सेवा करे उसे देवता कहा गया है।

16. अग्नि देवता :– सब कुछ जला सकने की सामर्थ्य है इस देवता में। अग्निहोत्र के कार्य के लिए अग्नि का अधिकतम प्रयोग किया जाता है।

17. जल देवता :– शरीर शुद्धि एवम् पीने के वास्ते जल देवता की परम आवश्यकता है।

18. आकाश :– यह तत्व अति सूक्ष्म तत्व है और परमात्मा के चित्त के स्थान पर अवस्थित है। पूरी सृष्टि की समस्त सूचनाऐं इस आकाश में प्रलय के बाद भी सन्निहित रहती हैं। इसी आकाश से समाधी अवस्था में तरह तरह की जानकारियाँ ऋषियों के चित्त में बह पड़ीं और फिर ऋषि के मुख से काव्य शैली में मंत्रों के रूप में फूट पड़ी। सम्पूर्ण त्रिगुणमयी माया (पराप्रकृति) चुम्बकीय विद्युत तरंगों के रूप में आकाश में स्थित रहती है और सृष्टि निर्माण के समय वे क्रियाशील होकर पदार्थ जगत के रूप में विकसित हो जाती है।

शुभम् भुयात् !

भवदीय

डा० अवधबिहारी लाल गुप्ता
बी–340, लोक विहार, पीतम पुरा,
दिल्ली–110034. फोन : 7184145